ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-१००
दिनांक-शुक्रवार २० दिसम्बर,२०१९

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः १८.० एवं ९.२ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ८८ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ६४ प्रतिशत, हवा की औसत गति ९.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.८ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन २.५ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १२.५ एवं दोपहर में १९.५ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा तथा सुबह में कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(२१-२५ दिसम्बर,२०१९)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २१-२५ दिसम्बर,२०१९ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम गरज वाले बादल छाये रह सकते हैं। अगले २४ दिसंबर के सुबह तक मौसम के आमतौर पर शुष्क रहने का अनुमान है। हलाकि २४-२५ दिसंबर के आसपास कहीं-कहीं हल्की बुंदा-बुंदी या वर्षा की संभावना है।
- अधिकतम तापमान १७ से १९ डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान ७ से ९ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- औसतन १० से १५ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। पूर्वानुमानित अवधि में सर्द वाली पछिया हवा चलने से ठंढ़ व कनकनी बरकरार रहने का अनुमान है। रात्री एवं सुबह में हल्के से मध्यम कुहासे छा सकते है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ९० से ९५ प्रतिशत तथा दोपहर में ६५ से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- २४-२५ दिसंबर के आसपास कहीं-कहीं हल्की बुंदा-बुंदी या वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान भाई को कृषि कार्य में सर्तकता बरतने की आवश्यकता है। इस दौरान फसलों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव सावधानी पूर्वक करें। फिलहाल फसलों में सिंचाई का कार्य स्थगित रखें।
- गेहूँ की पिछात किस्मों की बुआई २५ दिसम्बर से पहले संपन्न कर लें। इसके बाद बुआई करने पर उपज में कमी आ सकती है। गेहुँ की जो फसल २१-२५ दिनों की हो गई हो, में प्रति हेक्टेयर ३० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें। पहली सिंचाई के बाद गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है। यह गेहूँ की बुआई के ३० से ३५ दिनों के बाद की अवस्था है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्रम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्रम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- आलू में नियमित रुप से झुलसा रोग की निगरानी करें। बदलीनुमा मौसम तथा वतावरण में नमी होने पर यह बीमारी काफी तेजी से फैलती है। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व शिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पुरा पौधा झुलस जाता है। पत्ती पर भुरे रंग के जलीय धब्बे बनते है। कभी-कभी भुरे व काले घब्बे तने पर दिखाई देते है जिससे कंद भी प्रभावित होते है। इस रोग के लक्षण दिखने पर डाई-इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का २ किलोग्राम १००० लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से २-३ छिड़काव १० दिनों के अन्तराल पर करें। आलू में कजरा पिल्लू दिखने पर फसल में क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० का २.५ लीटर १००० लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। दोनों दवाओं को मिलाकर किसान भाई छिड़काव कर सकते है। पिछात आलू में प्रति हेक्टेयर ७५ किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।
- चना की फसल में चना की सुंडी की निगरानी करें। इस कीट से फसल को काफी हानी होती है। शुरु में यह सुंडी चने की पत्तियों एवं कोमल टहनीयों को क्षती पहुँचाती है। फलिया आ जाने पर सुंडी फलों में छेद कर घुस जाती है तथा अन्दर ही अन्दर दाने को खाती रहती है। फलियाँ खोखला हो जाने पर दुसरे स्वस्थ फलियों को खाती है। खेत में इसे चने के फलियों में आधी अन्दर तथा आधी बाहर की ओर लटका देखा जा सकता है। अत्यधिक प्रक्रोप की स्थिती में प्रोफेनोफॉस ५० ई०सी० दवा का १.५ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से ६०० से ८०० लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।
- टमाटर की फसल में फल छेदक कीट की निगरानी करे। इस कीट के पिल्लू टमाटर को बहुत अधिक नुकसान पहुचाते है। ये कच्चे तथा पके टमाटरो में छेद करके उनके अन्दर घुस कर गुदा खाते है। कीट के मल-मूत्र के कारण फल में सड़न प्रारंभ हो जाती है जिससे उत्पादन में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव हेतु ८-१० फेरोमौन ट्रैप प्रति हेक्टेयर खेत में लगाये। ब्यूभेरिया बेसियाना जैविक कीटनाशी का १ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड ४८ ई०सी०@ १ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी या इन्डोक्साकार्ब १४.५ एस०सी० १ मी०ली० प्रति २.५ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करे।
- प्याज के ५०-५५ दिनों के तैयार पौध की पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर रोपाई करे।
- अगात बोयी गई रबी मक्का की ५०-५५ दिनों की फसल में ५० किलोग्राम नत्रजन का उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।
- मटर की फसल में अच्छे फलन के लिए २ प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें। मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग एवं फल छेदक कीट की निगरानी करें।
- तापमान में लगातार गिरावट के कारण दुधारु पशुओं के दुध उत्पादन में आयी कमी को दूर करनें के लिए हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से ५० ग्राम नमक, ५० से १०० ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें।

आज का अधिकतम तापमानः १८.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ५.४ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः ८.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.४ डिग्री कम

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी